International Journal for Multidisciplinary Research
Plagiarism & Intellectual Property Rights in Digital Age (PIPRDA-2023)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बौद्धिक संपदा अधिकार इतिहास की दृष्टि से

डॉ रवीद्र गोस्वामी

सहायक प्राध्यापक इतिहास, शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय आगर मालवा

लीक पर वे चले जिनके कदम दुर्बल और हारे हैं
हमें तो अपनी यात्रा से बने अनिर्मित पंथ प्यारे है

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की पंक्तियां अपने आप में मानव की नैसर्गिक प्रतिभा की ओर इशारा करती है जो कि अपने आप में सबसे अलग,अनूठी और अलहदा है।

मानव अपनी ज्ञान की निरंतर बढ़ती परंपरा में नित नए आयाम जोड़ता है, साझा करता है और संपूर्ण मानव जाति को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करता आया है।

मानव मस्तिष्क अनंत संभावनाएं लिए सृजन करता आया है तथा आने वाली पीढ़ी को आगे बढ़ाने के लिए सदा ही प्रेरित करता आया है।

नैसर्गिक प्रतिभा से परिपूर्ण मानव मस्तिष्क एक अनूठी कृति है यह अनूठा है, अद्भुत है, प्रत्येक प्राणी अपने आप में प्रत्येक दूसरे से अलग है उसकी अपनी पहचान है यही वजह है कि पृथ्वी के किसी भी व्यक्ति के अंगुली छाप एक दूसरे से नहीं मिलते हैं। जब अंगुली छाप नहीं मिलते हैं तो उसके सृजन की नैसर्गिक कृति कैसे मेल खाएगी। प्रकृति का यही अंदाज प्रत्येक मानव से भी अपेक्षा करता है लेकिन वैश्विक स्तर पर ज्ञान के आदान-प्रदान एवं नए सृजन ने कई परेशानियां भी खड़ी की उनमें प्लेगेरिज्म एक है- किसी दूसरे की कृति की नकल करना, सृजनकर्ता की बिना इजाजत के। सृजन करता के अथक श्रम और मौलिकता को बिना तवज्जो दिए।

इसी के मद्देनजर वैश्विक एवं राष्ट्रीय स्तर पर 6 तरह के इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स को मान्यता दी गई है जिनमें पेटेंट्स, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट्स, डिजाइंस, डाटा बेसेस एंड ट्रेड सीक्रेट प्रमुख है। दुनिया भर मे बौद्धिक संपदा संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए 1967 में विश्व बौद्धिक संपदा संगठन डब्ल्यू आई पी ओ का गठन किया गया मौजूदा वक्त में इसके तहत 26 अंतर्राष्ट्रीय संधि आती है और अभी इसके 191 सदस्य राष्ट्र है, इसका मुख्यालय जिनेवा में है भारत 1975 में WIPO का सदस्य बना प्राचीन भारत में सृजन कर्ताओं ने कभी नाम लेने की होड़ नहीं कि आज भी कई अद्भुत कलाकृतियां बिना नाम की है यह सृजन कार की उदारता का जीवंत उदाहरण है। भारतीय संस्कृति की पहचान है एनोनिमिटी अर्थात अनामता उन्होंने बड़े-बड़े सृजन किए अद्भुत कलाकृतियां बनाई लेकिन कहीं भी अपना नाम नहीं छोड़ा, यह उनकी उदारता ही है और भारत में कहा जाता है -"नेकी कर दरिया में डाल" अर्थात अच्छे काम करना है व भूल जाना है, यही हमें अदृश्य रूप से WIPO के उद्देश्यों का पालन करने में सतत सहयोग देता आया।

भारत की सांस्कृतिक विशेषताओं में अनामता प्रमुख अंग है जिस तरह प्रकृति कभी अपना क्रेडिट नहीं लेती सिर्फ देती है उसी तरह प्राचीन भारत में ज्ञान को दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में बिना नकल किए सृजन कर्ता की विरासत को आगे पहुंचाया है यही वजह है कि प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण ग्रंथ उनके नाम के साथ आज पूरी

दुनिया के सामने वर्षों उपरांत भी उसी रूप में सभी के लिए उपलब्ध है ताकि ज्ञान का उपयोग वैश्विक स्तर पर हो सके। आज भी किसी भी समस्या के समाधान के लिए दुनिया भर के नैसर्गिक सृजन कर्ताओं की ओर अपेक्षा से देखता है। कोरोना महामारी में भारत ने वैश्विक स्तर पर वेकसिन को बनाने और वितरण में अपनी चिर परिचित उदारता को सारे विश्व के सामने पेश किया।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

हितोपदेशः २, ३-७१

यह अपना है, यह पराया है, इस प्रकार की गणना संकुचित हृदयवाले व्यक्तियों की होती है जो लोग उदार चित्तवाले होते हैं उनके लिए सारा संसार ही परिवार के समान है।

भारत में योग दिवस के माध्यम से भी पूरी दुनिया को योग की उदारता व स्वस्थ जीवन शैली से परिचित करवाया तथा 2023 मिलेट्स वर्ष के माध्यम से स्वास्थ से जुड़ी महत्वपूर्ण कड़ी को सारी दुनिया के सामने रखा।

विश्व बौद्धिक संपदा दिवस 26 अप्रैल को प्रतिवर्ष मनाया जाता है दुनिया भर में बौद्धिक संपदा की सुरक्षा को बढ़ावा देना आज विश्व A2K अर्थात एक्सेस टू नॉलेज (Access to Knowledge) पर काम कर रहा है एक्सेस टू नॉलेज शुड बी लिंक टू फंडामेंटल प्रिंसिपल्स आफ जस्टिस फ्रीडम एंड इकोनामिक डेवलपमेंट। इस संगोष्ठी के माध्यम से संपूर्ण मानव जाति के निर्बाध सृजन की नैसर्गिक उत्तरोत्तर वृद्धि की कामना के साथ मानव जीजिविषा को आयाम देती उसके नैसर्गिक कोशिशों को शब्द देती कविता की पंक्तियां बयान करती है।

इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है
एक खंडहर के हृदय सी,एक जंगली फूल सी,
आदमी की पीर गूंगी ही सही गाती तो है
निर्वचन मैदान में लेटी हुई है जो नदी,
पत्थरों से ओट में जा जा के बतियाती तो है
एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों
इस दीए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

यजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय ईशावस्योपनिषद के रूप में प्रसिद्ध है जिसके पन्द्रहवें श्लोक के माध्यम से पूषण (सूर्य) की महत्ता को प्रतिस्थापित किया गया है.

"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत् त्वं पूषन अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥"

हिरण्मयेन पात्रेण यानी परम ज्ञान के हिरण्मय (सोने का) पात्र या सुवर्ण पात्र का मुख पिहित (ढका हुआ) है. अर्थात, ब्रह्म (सत्य) का द्वार प्रखर ऊर्जस्विता के तेजस से ढका हुआ है। तत्त्वं पूषन अपावृणु अर्थात्, हे पूषन यानि सूर्य ज्ञान पर छाए इस आवरण को हटाएँ, ताकि हमें चेतन के मूल का तत्त्व दीख सके।

और वास्तविक ज्ञान नकल से कभी आ भी नहीं सकता वह अनूठा है अद्भुत है और उसकी व्याख्या सब की अपनी है सर्वमान्य है।

1970 में वर्ल्ड इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी ऑर्गेनाइजेशन ने काम करना शुरू किया। आज सारा विश्व आईपीआर और ओपन एक्सेस इंस्टिट्यूट के बीच तालमेल बिठाना चाहता है ग्रेटेस्ट गुड फॉर ग्रेटर नंबर ऑफ पीपल इसका आशय है नैसर्गिक सृजन का लाभ पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचे, वह सीमित ना रहे एक ही सृजन पर बार-बार काम करना मानव की श्रम शक्ति का गलत उपयोग करना होगा। आशा यही है कि मानव की अद्भुत सृजन शक्ति का अधिकतम व्यक्तियों द्वारा उपयोग संभव हो।

समय के साथ बदलते वैश्विक दौर में बौद्धिक संपदा का ज्यादा उपयोग किया जाने लगा। 1995 में वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन बना ट्रिप्स इसका समझौता है एग्रीमेंट ऑन ट्रेड रिलेटेड एस्पेक्ट आफ इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकारी यश:सुखकारी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

वास्तव में केवल ज्ञान ही मनुष्य को सुशोभित करता है, यह ऐसा अद्भुत खजाना है जो हमेशा सुरक्षित और छिपा रहता है, इसी के माध्यम से हमें गौरव और सुख मिलता है। ज्ञान ही सभी शिक्षकों को शिक्षक है। विदेशों में विद्या हमारे बंधुओं और मित्रो की भूमिका निभाती है। ज्ञान ही सर्वोच्च सत्ता है। राजा - महाराजा भी ज्ञान को ही पूजते व् सम्मानित करते हैं न की धन को। विद्या और ज्ञान के बिना मनुष्य केवल एक पशु के समान है।

ऐतिहासिक दृष्टि डालने पर प्राचीनतम आईपीआर के साक्षी जैन धर्म बौद्ध धर्म में अस्तेय के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं जैन धर्म में यह पंच महाव्रत में शामिल है और बौद्ध धर्म में 10 शील में। अस्तेय से आशय है किसी की वस्तु को बिना पूछे हाथ नहीं लगाना या चोरी नहीं करना यही आज का प्लेगेरिज्म है जो कि हम सालों से अंगीकृत करते हुए आए और नैतिक गुणों में समायोजित करते हुए आए। जिन की मिसाल पूरी दुनिया देती है। सृजन और विध्वंस सृष्टि दो पक्ष है, सृजन के साथ विध्वंस भी आता है जैसे कंप्यूटर में प्रोग्राम बने तो वायरस भी बने वायरस बनने के बाद एंटीवायरस बने और आज का युग जहां रजिस्टर प्रोग्राम्स दुनिया को उपलब्ध करवाता है वही ओपन एक्सेस प्लेटफॉर्म सहज रूप से तकनीको को आम जनता तक पहुंचाता है जो उसको वहन नहीं कर सकते जो खरीद नहीं सकते जो मोटी रकम नहीं लगा सकते उनके लिए भी ओपन एक्सेस प्लेटफार्म आईपीआर से परे जाकर मानव ज्ञान को आम जनता तक पहुंचाता है। कंप्यूटर युग में बदलते ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में चैट बोट आए जोकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अनन्य रूप है और चैट बोट की अगली कड़ी में आज पूरी दुनिया chat GPT पर चर्चा कर रही है यहां चैट जीपीटी से आशय है जेनरेटिव प्री ट्रेंड ट्रांसफार्मर इसे 30 नवंबर 2022 को लांच किया गया जो कि आने वाले समय में आईपीआर के मायने ही बदल देगा। अब बोद्धिक सम्पदा अपनी नयी व्याख्या खुद तलाश रहा है इसका वास्तविक स्वरूप सम्पूर्ण रूप से नए युग के मानव कि जरूरतों के हिसाब से अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने मे सक्षम होगा और अपने वास्तविक उद्देश्य सभी के लिए ज्ञान -एक्सैस टु नॉलेज के सरोकारों से परिचित करवाएगा।